चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार,

8 से 15 सितम्बर, तक कपास की खेती के लिए सुझाव

'A+'
NAEAB – ICAR Accredited

बारिश के बाद अगर फसल में पानी भरता है तो जल निकासी का प्रबंध अवश्य करें। **इस प्रकार के मौसम में जड़ गलन, उखेड़ा रोग, टिंडा गलन, गुलाबी सुंडी, हरा तेला एवं सफेद मक्खी का प्रकोप देखने को मिलता है,** इसलिए खेतों की निगरानी अवश्य करें तथा मौसम को देखते हुए ही स्प्रे व् और अन्य क्रियाएं करें, एवं हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा नीचे बताई गई सिफारिशों का अनुसरण करें।

वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए अति महत्वपूर्ण सुझाव

- **अत्यधिक बारिश के बाद फसल को बचाने के लिए खेत में बर्मा द्वारा या मोनोब्लॉक पंप द्वारा जल निकासी का प्रबंध अवश्य करें।**
- **पैराविल्ट के लिए किसान भाई लक्षण दिखाई देते ही 24 से 48 घंटों के अंदर 2 ग्राम कोबाल्ट क्लोराइड 200 लीटर पानी में घोल बनाकर 24 से 48 घंटे में खेत में छिड़काव करें परंतु पौधे सूख जाने दवा का असर नहीं होगा ।**
- **जीवाणु अंगमारी और टिंडा गलन रोग के लिए किसान भाई 6 से 8 ग्राम स्ट्रेप्टोसाक्लीन और 600 से 800 ग्राम कॉपर ऑक्सिक्लोराइड को 150 से 200 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ 15 से 20 दिन के अंतराल पर दो से तीन छिड़काव करें।**
- **नरमा की फसल में गुलाबी सुंडी का प्रकोप फलीय भागों (फूल एवम् टिंडो) पर 5–10 प्रतिशत होने पर प्रोफेनोफोस (क्यूराक्रोन/सेल्क्रोन/कैरिना) 50 ई सी की 600 से 800 मिलीलीटर मात्रा या क्यूनालफास (एकालक्स) 25 ई सी की 800–1000 मिलीलीटर मात्रा को 175–200 लीटर पानी साथ मिलाकर प्रति एकड़ 7–10 के अंतराल पर छिड़काव करें।**
- **बी.टी. कपास की अधिकतम उत्पादन के लिए बौकी एवं फूल बनने की अवस्था पर सिंचाई या बारिश से पूर्व एवं बाद (12 घंटे के भीतर) NAA की 25 मि.ली. और कोबाल्ट क्लोराइड की एक ग्राम मात्रा को 100 लीटर पानी के हिसाब से छिड़काव करें।**

टिंडा गलन रोग के लक्षण	पैराविल्ट रोग के लक्षण

अधिक बरसात के बाद पंप द्वारा जल निकासी	**गुलाबी सुंडी का प्रकोप**
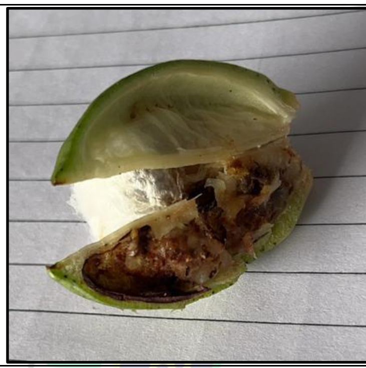	
गुलाबी सुंडी का प्रकोप	

अन्य सुझाव

सस्य क्रियाएँ

- सूक्ष्म पोषक तत्त्व जैसे की बोरोन, मैंगनीज और आयरन केवल लक्षण दिखाई देने पर ही डालें।
- टिंडे बनने के बाद कपास की फसल में 2 पैकेट 13:0:45 (पोटैशियम नाइट्रेट) 200 लीटर पानी के साथ मिलाकर प्रति एकड़ छिड़काव करें।

कीट प्रबंधन

- गुलाबी सुण्डी अदखिले टिंडों में नरमे के दो बीजों (बिनौले) को जोड़कर 'भंडारित लकड़ियों' में निवास करती हैं। अतः जिन किसान भाइयों की नरमा की फसल के आसपास पिछले साल की नरमा की बनछटिया रखी हुए हैं या उनके खेतों के आसपास कपास की जिनिंग व बिनौलों से तेल निकालने वाली मिल लगती है, उन किसानों को अपने खेतों पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है, क्योंकि इन खेतों में गुलाबी सुण्डी का प्रकोप अधिक होता है।
- गुलाबी सुंडी के प्रकोप की निगरानी के लिए गुलाबी सुंडी के 2 फेरोमोन ट्रैप प्रति एकड़ लगाएं तथा इनमे फसने वाले गुलाबी सुंडी के पतंगों को 3 दिनों के अंतराल पर गिनती करें। मध्य अगस्त के बाद यदि इनमें कुल 24 पतंगे प्रति ट्रैप तीन दिन में आते हैं तो कीटनाशक के छिड़काव की आवश्यकता हैं।
- इसके अतिरिक्त फसल में कम से कम 100 फूलों का गुलाबी सुंडी के लिए निरिक्षण करें। टिन्डे बनने के बाद गुलाबी सुंडी ज्यादातर टिंडों में पाई जाती है। अतः एक एकड़ से 20 - 25 टिन्डे (12–15 दिन पुराने) तोड़कर टिंडो को फाड़कर निरिक्षण करें।
- सितम्बर माह में कपास की फसल में सफेद मक्खी वं हरे तेला का प्रकोप हो जाता हैं इसलिए इनकी निगरानी रखें। हरा तेला 2 शिशु प्रति पत्ता एवं सफेद मक्खी यदि 6–8 प्रौढ़ प्रति पत्ता मिलते हैं तो

फ्लॉनिकामिड़ (उलाला) 50 डब्लू जी की 60 ग्राम मात्रा या एफिडोपाईरोपेन (सेफिना) 50 G/L की 400 मिली मात्रा प्रति 175–200 लीटर पानी की दर से एक छिड़काव करें।

- सफ़ेद मक्खी का ज्यादा प्रकोप होने पर 400 मिलीलीटर पाइरिप्रोक्सिफ़ेन (डायटा) 10 ई. सी. या 240 मिलीलीटर स्पिरोमेसिफेन (ओबेरोन) 22.9 एस. सी. को 200 से 250 लीटर पानी में घोलकर प्रति एकड़ की दर से 10 से 12 दिनों के अंतराल पर आवश्यकतानुसार बारी–बारी से छिड़काव करें। पाइरिप्रोक्सिफ़ेन व स्पिरोमेसिफेन सफ़ेद मक्खी की शिशु (निम्फ) अवस्था के प्रति काफी प्रभावी हैं।
- देसी कपास में इस माह चित्तीदार सुंडी का प्रकोप पाया जाता है। इसके नियंत्रण के लिए स्पाइनोसेड (ट्रेसर) 45 एस सी की 75 मिली मात्रा प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें।
- बरसात के मौसम में स्प्रे के घोल में चिपचिपा पदार्थ जैसे सेण्डवित, सेलवेट 99 या टीपोल की 60 मिलीलीटर मात्रा प्रति 175 – 200 लीटर घोल मिलाएं।

रोग प्रबंधन

- पत्ती मरोड़ रोग के कारण नसे मोटी, पत्तियों का ऊपर की ओर मुड़ना व पौधे छोटे रह जाते हैं। यह रोग विषाणु द्वारा फैलता है। सफेद मक्खी इस रोग को फैलाने में सहायक है। सफेद मक्खी का पूर्ण रूप से नियंत्रण करें ।
- जड़ गलन बीमारी से सूखे हुए पौधों को खेत में से उखाड़ कर जमीन में दबा दें, ताकि बीमारियों को आगे बढ़ने से रोका जा सके।
- उखेड़ा रोग में भी पौधे मुरझा कर सूख जाते हैं लेकिन जब पौधों को बीच में से फाड़ कर देखते हैं तो भूरी या काले रंग की धारी दिखाई देती है यह खेड़ा रोग के लक्षण होते हैं
- जड़ गलन और उखेड़ा रोग से प्रभावित पौधों के आसपास स्वस्थ पौधों में 1 मीटर तक कार्बेंडाजिम 2 ग्राम प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर 400-500 मिलीलीटर प्रति पौधा जड़ों में डालें ।
- जड़ गलन रोग के लिए दवाई डालते समय किसान भाई पीठ वाले स्प्रे पंप का प्रयोग करते समय मोटे फव्वारे का प्रयोग करके जड़ों के पास इस फफूंदनाशक घोल को डालें।
- फसल की लगातार निगरानी रखें व प्रारंभ में पत्ती मरोड़ रोग से ग्रस्त पौधों को उखाड़ कर दबा देना चाहिए।

अन्य सलाह

- हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि मौसम विभाग द्वारा समय समय पर जारी मौसम पूर्वानुमान को ध्यान में रखकर ही कीटनाशकों एवं फफूंदनाशकों का प्रयोग करें।

अधिक जानकारी के लिए निम्नलिखित नंबरों पर संपर्क करें

9812700110 (अनुभाग अध्यक्ष) 8002398139 (कीट वैज्ञानिक) 7015105638 (रोग वैज्ञानिक) 9466812467 8901047834 (मृदा वैज्ञानिक) 9416530089 9041126105 9992911570 (पौध प्रजनक)

कपास अनुभाग, आनुवंशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग

अनुसंधान निदेशालय, चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय , हिसार

सितम्बर में कपास में आने वाले कीटों एवं बीमारियों के लक्षण

पत्ती मरोड़ रोग के लक्षण	जड़ गलन रोग से प्रभावित पौधे	उखेड़ा रोग से प्रभावित जड़
गुलाबी सुंडी के प्रकोप से गुलाबनुमा फूल	**फूल में गुलाबी सुंडी**	**फिरकीनुमा या पँखनुमा बोक्की**

हरा तेला के प्रकोप के लक्षण	**पत्ती की निचली सतह पर सफेद मक्खी का प्रकोप**